

# पद्य चालीस का छिपा हुआ इतिहास — संख्या बारह

बारह संख्या

Jeff Pippenger

2026-05-23

सामान्यतः यह दावा किया जाता है कि यदि पाँच व्यक्तियों ने एक ही मोटर-वाहन दुर्घटना देखी हो, तो वे पाँचों साक्षी उसी एक विनाश के पाँच भिन्न-भिन्न वृत्तांत प्रस्तुत करेंगे; यद्यपि आज, उस कालावधि में जब पवित्र आत्मा मानवजाति से वापस लिया जा रहा है, उन साक्षियों में निःसंदेह ऐसे लोग भी सम्मिलित होंगे जो अपनी व्यक्तिगत विश्व-दृष्टि को बनाए रखने के लिए उन्होंने जो देखा उसके विषय में कल्पना गढ़ेंगे और असत्य कहेंगे, और ऐसा करते हुए यह विश्वास करेंगे कि वे सद्गुण का आचरण कर रहे हैं। गुप्त इतिहास में भविष्यवाणी-संबंधी सत्य की कई भिन्न धाराएँ हैं, जो उन्हीं घटनाओं के विभिन्न साक्षियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। परमेश्वर के वचन में कोई असत्य नहीं है, यद्यपि उन घटनाओं के विषय में मनुष्य की व्याख्या प्रायः त्रुटिपूर्ण होती है; तथापि इस इतिहास के बाइबिलीय साक्षी, जब ठीक रीति से विभाजित किए जाते हैं, तो सब के सब एक-दूसरे के साथ सहमत होते हैं।

पतरस इतिहास में एक लाख चवालीस हजार का प्रतीक है, और उसकी गवाही 18 जुलाई, 2020 की निराशा से 31 दिसंबर, 2023 की जागृति तक के एक प्रगतिशील इतिहास का प्रतिनिधित्व करती है; फिर उस रूप में जिसमें वह बाह्य दर्शन की पहली परीक्षा में सम्मिलित है, तत्पश्चात् आंतरिक दर्शन की दूसरी परीक्षा में, जिसके बाद नैशविल के अग्नि-गोले की लिटमस-परीक्षा होगी, यहाँ तक कि अन्यजातियों के लिए ध्वजा उठाए जाने तक।

डोनाल्ड ट्रम्प उस गुप्त इतिहास में उस व्यक्ति के रूप में विद्यमान है जो समस्त वैश्विकतावादियों को उकसाता है, जिनमें विश्व के वैश्विकतावादी, डेमोक्रेटिक पार्टी, और रिपब्लिकन पार्टी के RINO सम्मिलित हैं। वह उस भविष्यवाणीगत स्वरूप की विशेषताओं को पूरा करता है जो पशु की मूरत से संबद्ध हैं, क्योंकि वह सात में से एक होकर आठवें के रूप में राजनीतिक मृत्यु से पुनर्जीवित होता है। वह उस समस्त गुप्त इतिहास में स्थित है, और उसके भाग्य में यह ठहराया गया है कि जब “सक्रिय निरंकुशता” पहले संयुक्त राज्य अमेरिका पर और उसके पश्चात् संसार पर लागू की जाएगी, तब वह शासन कर रहा होगा। धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद, जो पृथ्वी के पशु के दो सींगों में ट्रम्प के प्रतिरूप के रूप में है, मक्काबियों के इतिहास में वहाँ विद्यमान है। संयुक्त राष्ट्र और रूस में अजगर की शक्ति की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ उस इतिहास में साक्ष्य देती हैं। पोपतंत्र, तेरे लोगों के लुटेरों के रूप में, वहाँ सब कुछ एक साथ बाँधने और दर्शन को स्थापित करने के लिए विद्यमान है।

प्रिय पाठक, पतरस आप ही हैं। पतरस एक लाख चवालीस हजार के ध्वजवाहकों में सम्मिलित होने का अभ्यर्थी है। पतरस बीच में, अनेक भविष्यवाणी-संबंधी रेखाओं के मध्यबिंदु पर खड़ा है, और विश्वास के द्वारा परमपवित्र स्थान में प्रवेश करते हुए मसीह के दर्शन द्वारा संपन्न होने वाले रूपांतरण को प्राप्त कर रहा है। पतरस रूपांतरण के पर्वत पर है, जहाँ उसे मसीह के स्वरूप में परिवर्तित किया जाना है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका पशु की मूरत का निर्माण कर रहा है।

“भाइयो, हम में स्वार्थ कम और परमेश्वर अधिक होना चाहिए। वह कलीसिया की शक्तियों पर अपना अधिकार जताता है; परन्तु बहुत बड़ी सीमा तक हमारे लोगों की योग्यता अयोग्य वस्तुओं में लगी हुई है। बहुत अधिक समय तुच्छ विचारों और दावों पर लगाया जाता है। परमेश्वर चाहता है कि हम पर्वत पर ऊपर चढ़ें, और अधिक प्रत्यक्ष रूप से उसकी उपस्थिति में आएँ। हम एक ऐसे संकट में प्रवेश कर रहे हैं, जो संसार की उत्पत्ति से लेकर अब तक किसी भी पूर्व समय से अधिक, उन प्रत्येक जनों से, जिन्होंने मसीह का नाम लिया है, पूर्ण समर्पण की माँग करेगा। परमेश्वर का कार्य हम में जो कुछ है, उसका सब कुछ माँगता है। परन्तु हमारे लोग यह समर्पण कभी नहीं करेंगे, जब तक कि उनके हृदय परिवर्तित न हो जाएँ। उन्हें उतने ही रूपांतरण की आवश्यकता है, जितनी पतरस को थी। जब वे इस प्रकार जीवन्त किए जाएँगे, तब मसीह उनसे कह सकेगा, ‘अपने भाइयों को स्थिर कर,’ ‘मेरी

भेड़ों की चरवाही कर,' 'मेरे मेमनों की चरवाही कर।'”

“जब दैवी शक्ति मानवीय प्रयास के साथ संयुक्त होती है, तब कार्य सूखी ढूँठ में लगी आग के समान फैल जाएगा। परमेश्वर ऐसी साधन-शक्तियों का उपयोग करेगा जिनकी उत्पत्ति को मनुष्य समझ न सकेगा; स्वर्गदूत वह कार्य करेंगे जिसे करने का आशीर्ष मनुष्यों को मिल सकता था, यदि उन्होंने परमेश्वर की मांगों का उत्तर देने की उपेक्षा न की होती। अब यह कार्य मनुष्य के सामने प्रस्तुत है। क्या वह इसे ग्रहण करेगा? वर्तमान समय में कर्मियों के लिए बहुत से द्वार अनबंद और पूर्णतः खुले हुए हैं। क्या वे इन द्वारों से प्रवेश करेंगे? स्वामी की आज्ञा पर यह कहने के लिए कौन तैयार है, 'मैं यहाँ हूँ, हे प्रभु, मुझे भेज'? मकिदुनियाई पुकार संसार के सब भागों से करुण निवेदनों के रूप में हमारे पास आती है, 'इधर आकर हमारी सहायता करो।'” Review and Herald, December 15, 1885.

हमें पर्वत पर आना है और पतरस के समान परिवर्तित होना है; और जब हम ऐसा करते हैं, तब हम यशायाह के समान शुद्ध किए जाएंगे। यह शुद्धीकरण उस समय पूर्ण होता हुआ दर्शाया गया है जब ईश्वरीय सामर्थ्य मानवीय प्रयास के साथ संयुक्त होती है। मकिदुनिया का बुलावा चालीसवें पद के गुप्त इतिहास में प्रकट होता है।

“हमारे नगरों में दृढ़तापूर्वक प्रयास किए जाने का समय आ गया है। लूका 21 पढ़ो। यह इसी समय का संदेश है, और यह अंत की इस पीढ़ी के लिए लिखा गया है। हमारे और उस कार्य के बीच, जिसे करने के लिए परमेश्वर ने हमें दिया है, किसी भी वस्तु को आड़े नहीं आने देना चाहिए। नगरों में रहने वालों के सम्मुख सत्य प्रस्तुत करने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। ”

“दूसरों में दोष निकालने में तनिक भी समय न गँवाया जाए। सब प्रकार का विवाद बंद हो जाना चाहिए। हमें भाइयों के समान प्रेम करना है। आओ, हम परमेश्वर के साथ पर्वत पर चढ़ें, ताकि हम लौटकर अपने ऊपर परमेश्वर की महिमा का प्रतिबिंब लेकर आएँ। वह प्राप्त करने का एकमात्र स्थान परमेश्वर के साथ पर्वत पर ही है। प्रभु के वचन का, जैसा वह उसकी व्यवस्था में प्रकट किया गया है, अध्ययन करने में एक कार्य किया जाना है। बहुत-सा अनौपचारिक पठन हुआ है, परंतु वास्तविक अध्ययन कितना हुआ है? मसीह मनुष्यों के बीच रहे और उस व्यवस्था की ठीक-ठीक विधियों का संसार में उपदेश किया।”

“धार्मिकता में यह कार्य शीघ्र ही संक्षिप्त कर दिया जाएगा। इसे पूर्णता तक पहुँचाने के लिए हमारे प्रयत्नों में हमें अधिक दृढ़ और अधिक भक्तिपूर्ण होना चाहिए। वह समय आ गया है कि हमें केवल सक्रिय ही नहीं होना है, वरन् उस सक्रियता को इस प्रकार केंद्रित करना है कि उसका प्रभाव स्पष्ट रूप से प्रकट हो। यदि हम परमेश्वर के साथ पर्वत पर अधिक समय बिताते, तो हमारा कार्य अधिक प्रभावकारी होता। ”

“हमारे प्रचार में और अधिक प्रभावोत्पादक सामर्थ्य अवश्य आनी चाहिए। आत्मा की तलवार को नए सिरे से धारदार किया जाए और सामर्थ्य के साथ आगे भेजा जाए। क्या हम अपने आप को इस कार्य में ऐसे पुरुषों के समान लगाएंगे जिनके सामने अनन्तता की समस्त वास्तविकताएँ उपस्थित हैं? हम चाहते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य आगे बढ़े और पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य को पूरा करे।” Australian Union Conference Recorder, October 1, 1906.

उसी पर्वत पर, जो परमपवित्र स्थान भी है, दिव्यता हमारी मानवता के साथ संयुक्त होती है; और Luke 21 अंतिम पीढ़ी के लिए संदेश है, जिसे नगरों को अंतिम चेतावनी देनी है। नगरों के लिए यह चेतावनी का कार्य स्वर्गदूत पूरा करेंगे, यदि हम पर्वत पर आने और उसकी प्रतिमा में रूपांतरित होने से इनकार करें। यह कार्य नगरों के लिए है, क्योंकि अंतिम पीढ़ी ऐसे काल में जीवित है जब “हज़ारों नगरों” का नाश होना है। नगरों के विनाश की भविष्यवाणी-संबंधी अवधि Nashville के अग्नि-गोले से आरंभ होती है, और चेतावनी देने का कार्य वहीं से प्रारंभ होता है, और उस कार्य की पहचान Luke 21 में की गई है। वर्षों के दौरान हम बार-बार यह दिखा चुके हैं कि Luke 21 तीसरे हाथ के इस्लाम के विषय में एक चेतावनी है।

लूका 21 में यीशु ने उस इतिहास का अनुसरण किया जो प्राचीन इस्राएल को परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा के रूप में अस्वीकार किए जाने से आरम्भ होकर पोपीय उत्पीड़न के अन्धकारमय युगों के अंत तक पहुँचता है, और फिर उन चिन्हों तक अग्रसर होता है जिन्होंने मिलराइट इतिहास का उद्घाटन किया। मिलराइट इतिहास एक लाख चवालीस हजार के इतिहास का चित्रण करता है।

और वे तलवार की धार से गिरेंगे, और सब जातियों में बन्दी बनाकर ले जाए जाएंगे; और यरूशलेम अन्यजातियों के पैरों तले रौंदी जाएगी, जब तक कि अन्यजातियों के समय पूरे न हो जाएं। और सूर्य में, और चन्द्रमा में, और तारों में चिन्ह प्रकट होंगे; और पृथ्वी पर जातियों को संकट होगा, और वे घबराहट में पड़ेंगी; समुद्र और लहरें गरजेंगी; और पृथ्वी पर आनेवाली बातों के भय और प्रतीक्षा के कारण मनुष्यों के हृदय उनके भीतर से बैठ जाएंगे; क्योंकि आकाश की शक्तियाँ हिला दी जाएंगी। और तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल में आते देखेंगे। लूका 21:24-27.

प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय में यूहन्ना यह पहचानता है कि पोपीय शासन के 1,260 वर्ष भविष्यद्वाणी के अनुसार “अन्यजातियों को” दिए गए थे, और लूका यह पहचानता है कि 1798 में अन्यजातियों का समय पूरा हुआ। तब मसीह ने सूर्य, चन्द्रमा और तारों में उन चिन्हों का उल्लेख किया जो मिलरवादी आंदोलन को चिह्नित करते हैं, और यह कहकर निष्कर्ष किया: “जाति-जाति पर संकट और घबराहट होगी; समुद्र और लहरें गरजेंगी; और पृथ्वी पर आनेवाली बातों के भय और प्रतीक्षा के कारण मनुष्यों के हृदय बैठते जाएंगे।” लूका में “जातियों पर संकट” वही है जो प्रकाशितवाक्य में “जातियों का क्रोधित होना” है।

और जातियाँ क्रोधित हुईं, और तेरा प्रकोप आ पहुँचा, और मरे हुआँ का वह समय भी आ पहुँचा कि उनका न्याय किया जाए, और तू अपने सेवकों भविष्यद्वाक्ताओं को, और पवित्र लोगों को, और उन्हें जो तेरे नाम का भय मानते हैं, छोटे और बड़े, प्रतिफल दे; और जो पृथ्वी का नाश करते हैं, उनका नाश करे। प्रकाशितवाक्य 11:18.

परमेश्वर का “क्रोध” सात अंतिम विपत्तियों में प्रकट होता है, और तब आरम्भ होता है जब मीखाएल उठ खड़ा होता है और मनुष्यों की परीक्षाकाल-सीमा समाप्त हो जाती है। जातियों का क्रोधित होना एक ऐसी अवधि है जो परीक्षाकाल की समाप्ति तक ले जाती है। जातियों का क्रोधित होना 9/11 से आरम्भ हुआ, जब तीसरे हाथ का इस्लाम आ पहुँचा, और इस प्रकार पिछली वर्षा के आगमन को चिह्नित किया।

“मैंने देखा कि जातियों का क्रोध, परमेश्वर का प्रकोप, और मरे हुआँ का न्याय करने का समय—ये एक-दूसरे से पृथक और भिन्न थे, और एक के बाद एक आनेवाले थे; और यह भी कि मीखाएल अब तक खड़ा नहीं हुआ था, और उस क्लेश का समय, जैसा कभी न हुआ था, अभी तक आरम्भ नहीं हुआ था। जातियाँ अब क्रोधित हो रही हैं; परन्तु जब हमारा महायाजक पवित्रस्थान में अपना कार्य पूरा कर लेगा, तब वह उठ खड़ा होगा, पलटा लेने के वस्त्र धारण करेगा, और तब अन्तिम सात विपत्तियाँ उण्डेली जाएँगी।”

“मैंने देखा कि वे चार स्वर्गदूत चारों पवनों को तब तक रोके रहेंगे जब तक पवित्रस्थान में यीशु का कार्य पूरा न हो जाए, और उसके बाद अन्तिम सात विपत्तियाँ आएँगी।” Early Writings, 36.

मिलेराइट इतिहास में राष्ट्रों का क्रोधित होना, अथवा जैसा कि लूका अभिलेख करता है, “जातियों की क्लेश,” इस्लाम के द्वारा पूरा हुआ।

“1838 में तुर्की मिस्र के साथ युद्ध में उलझ गया। मिस्रियों के तुर्की सत्ता को उलट देने की प्रबल संभावना दिखाई दे रही थी। इसे रोकने के लिए यूरोप की चार महान शक्तियाँ—इंग्लैंड, रूस, ऑस्ट्रिया, और प्रशा—तुर्की सरकार को सहारा देने के लिए हस्तक्षेप करने लगीं।” उरियाह स्मिथ, Synopsis of Present Truth, 218.

1838 में तथाकथित “पूर्वी प्रश्न” राष्ट्रों को हिला रहा था, और “पूर्वी प्रश्न” इस्लाम था, अर्थात् बाइबिल की पूर्वी पवन। मिलेराइट इतिहास में राष्ट्र इस्लाम के द्वारा हिला दिए गए, और तब प्रभु बादलों में होकर परमपवित्र स्थान में आया, इस प्रकार उस समय का प्रतिरूप प्रस्तुत करते हुए जब प्रभु अपने दूसरे आगमन पर बादलों में आएगा। उसके

बादलों में आने से पहले इस्लाम राष्ट्रों को संकट में डालता है, और यही वह संदेश है जिसकी घोषणा पतरस को "हजारों नगरों" के विनाश से पूर्व नगरों के लिए करने को दी गई है। नगरों के विनाश की अवधि नैशविल के अग्निगोलों से आरम्भ होती है।

"काश, परमेश्वर की प्रजा को उन हज़ारों नगरों के आसन्न विनाश का कुछ बोध होता, जो अब लगभग मूर्तिपूजा के हवाले हो चुके हैं! परन्तु जो बहुत से लोग सत्य का प्रचार करने वाले होने चाहिए, वे अपने ही भाइयों पर दोषारोपण और निन्दा कर रहे हैं। जब परमेश्वर की परिवर्तनकारी सामर्थ्य मनो पर आएगी, तब एक निश्चयात्मक परिवर्तन होगा। मनुष्यों में आलोचना करने और गिराने की कोई प्रवृत्ति न रहेगी। वे ऐसी स्थिति में खड़े न होंगे जो ज्योति को संसार पर चमकने से रोकती है। उनकी आलोचना, उनका दोषारोपण, समाप्त हो जाएगा। शत्रु की शक्तियाँ युद्ध के लिए एकत्र हो रही हैं। हमारे सामने कठोर संघर्ष हैं। निकट आओ, मेरे भाइयों और बहनो, निकट आओ। मसीह के साथ बाँध जाओ। 'तुम न कहो, सम्मिलन,... और न उसके भय को भय मानो, और न आतंकित हो। सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानो; और वही तुम्हारा भय हो, और वही तुम्हारा आतंक हो। और वह पवित्रस्थान ठहरेगा; परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान, और यरूशलेम के निवासियों के लिये फन्दा और जाल होगा। और उन में से बहुत से ठोकर खाएँगे, और गिरेंगे, और टूट जाएँगे, और फँसेंगे, और पकड़े जाएँगे।'"

"संसार एक रंगमंच है। उसके अभिनेता, उसके निवासी, अंतिम महान नाटक में अपनी-अपनी भूमिका निभाने की तैयारी कर रहे हैं। परमेश्वर दृष्टि से ओझल कर दिया गया है। मनुष्यता की विशाल जनसमूहों में कोई एकता नहीं है, सिवाय इसके कि लोग अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परस्पर संघर्ष हो जाते हैं। परमेश्वर देख रहा है। अपने विद्रोही प्रजाजनों के संबंध में उसके उद्देश्य पूरे किए जाएँगे। संसार मनुष्यों के हाथों में नहीं सौंपा गया है, यद्यपि परमेश्वर कुछ समय के लिए भ्रम और अव्यवस्था के तत्त्वों को प्रभुत्व करने की अनुमति दे रहा है। नीचे से एक शक्ति कार्य कर रही है, ताकि इस नाटक के अंतिम महान दृश्य उपस्थित किए जाएँ,—शैतान मसीह के रूप में आता हुआ, और उन लोगों में अधर्म की सब प्रकार की छलना के साथ कार्य करता हुआ, जो अपने आप को गुप्त समाजों में एक-दूसरे से बाँध रहे हैं। जो लोग संघर्षबद्धता के प्रति लालसा के आगे झुक रहे हैं, वे शत्रु की योजनाओं को कार्यान्वित कर रहे हैं। कारण के पीछे परिणाम अवश्य आएगा।"

"अपराध लगभग अपनी सीमा तक पहुँच चुका है। संसार भ्रम से भर गया है, और शीघ्र ही मनुष्यों पर एक बड़ा आतंक आने वाला है। अंत बहुत निकट है। हम जो सत्य को जानते हैं, हमें उस बात के लिए तैयारी करनी चाहिए जो शीघ्र ही प्रबल आश्चर्य के समान संसार पर आ पड़ने वाली है।" Review and Herald, September 10, 1903.

"भ्रम और अव्यवस्था के तत्त्व" उस व्यवस्था के फलस्वरूप निर्मित किए जा रहे हैं, जिसे सिस्टर व्हाइट "उच्च शिक्षा" के रूप में चिह्नित करती हैं, और जिसे वह "अधर्म का भेद" भी कहती हैं। नैशविल का पार्थेनोन मंदिर उस मिथ्या शिक्षा का प्रतीक है, जो अब उस "भ्रम और अव्यवस्था" को उत्पन्न कर रही है, जो "कुछ समय तक प्रभुत्व" रखती है। नैशविल पर अग्नि-गोले इस्लाम द्वारा लाए जाते हैं, और वे "भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष" पर परमेश्वर के न्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब नैशविल पर आघात होता है, तब मध्यरात्रि के पुकार के प्रचार की अल्प अवधि आरम्भ होती है और वह रविवार के विधान तक ले जाती है, जहाँ यशायाह का दुष्ट "गठबंधन" अपना अंतिम कदम उठाता है, जबकि संसार को उस एक-विश्व सरकार को स्वीकार करने के लिए विवश किया जाता है, जिसे प्रकाशितवाक्य तेरह में पशु की मूरत के रूप में पहचाना गया है। दुष्ट गठबंधन की यशायाह द्वारा की गई पहचान एक लाख चवालीस हजार के मुद्रांकन के साथ संगति रखती है।

तुम उन सब के विषय में, जिनके विषय में यह प्रजा कहे, "षड्यंत्र," तुम "षड्यंत्र" मत कहो; और जिससे वे डरते हैं उससे तुम मत डरो, और न भयभीत हो। सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानो; वही तुम्हारा भय ठहरे, और वही तुम्हारा आतंक हो। तब वह पवित्रस्थान ठहरेगा; परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस पहुँचाने वाली चट्टान, और यरूशलेम के निवासियों के लिये फन्दा और जाल होगा। और उनमें से बहुत से

ठोकर खाएँगे, और गिरेंगे, और टूट जाएँगे, और फँसेंगे, और पकड़ लिये जाएँगे।

गवाही को बाँध दो, और मेरी शिष्यमण्डली के बीच व्यवस्था पर मुहर लगा दो। और मैं यहोवा की बाट जोहूँगा, जो याकूब के घराने से अपना मुख छिपाए हुए है; और मैं उसी की प्रतीक्षा करूँगा। देखो, मैं और वे बालक, जिन्हें यहोवा ने मुझे दिया है, इस्राएल में सेनाओं के यहोवा की ओर से, जो सिष्योन पर्वत पर निवास करता है, चिन्हीं और अद्भुत कामों के लिये हैं। और जब वे तुम से कहें, कि जिनमें परिचित आत्माएँ हैं उनके पास जाओ, और उन जादूगरों के पास जो चूँ-चूँ करते और बुदबुदाते हैं; तो क्या किसी प्रजा को अपने परमेश्वर के पास न जाना चाहिए? क्या जीवितों के लिये मरे हुआँ के पास जाया जाए? व्यवस्था और गवाही की ओर! यदि वे इस वचन के अनुसार नहीं बोलते, तो इसका कारण यह है कि उनमें ज्योति नहीं है। यशायाह 8:12-20।

सिस्टर व्हाइट का यह अनुच्छेद संकेत करता है कि “भ्रम और अव्यवस्था” का एक काल “शैतान के मसीह के रूप में आने” की ओर ले जाता है। रविवार की व्यवस्था के समय शैतान मसीह का रूप धारण करके प्रकट होता है।

“परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करते हुए पोपशाही की संस्था को लागू करने वाली आज्ञा के द्वारा हमारा राष्ट्र अपने को धार्मिकता से पूर्णतः विच्छिन्न कर लेगा। जब प्रोटेस्टेंटवाद उस खाई के पार अपना हाथ बढ़ाकर रोमी सामर्थ्य का हाथ थाम लेगा, जब वह उस अथाह गर्त के ऊपर से हाथ बढ़ाकर अध्यात्मवाद के साथ हाथ मिला लेगा, जब इस त्रिविध संघ के प्रभाव के अधीन हमारा देश एक प्रोटेस्टेंट और गणतांत्रिक शासन के रूप में अपने संविधान के प्रत्येक सिद्धांत का परित्याग कर देगा, और पोपीय असत्यों तथा भ्रमों के प्रसार के लिए प्रावधान करेगा, तब हम जान सकते हैं कि शैतान की अद्भुत कार्यवाही का समय आ पहुँचा है और अंत निकट है।”  
Testimonies, volume 5, 451.

“भ्रम और अव्यवस्था” का समय संडे लॉ से पूर्व आता है। संडे लॉ से ठीक पहले, उस अवधि में जिसका प्रतिरूप एक्सेटर कैम्प मीटिंग और पिन्नेकुस्त से पहले ऊपरी कक्ष में बिताए गए उन दस दिनों में दिखाई देता है, एक लाख चवालीस हजार को “एकत्र होकर दबकर खड़े होना है, हे मेरे भाइयों और बहनों, ... मसीह के साथ बाँध जाना है।” मुद्रांकन संडे लॉ से पहले होता है, और उसी इतिहास में वह दुष्ट महासंघ एक-विश्व सरकार स्थापित करने के अपने अंतिम कार्य का आरम्भ करता है।

मुहरबन्दी के समय मसीह धर्मियों के लिए पवित्रस्थान होंगे, परन्तु दुष्टों के लिए ठोकर का पत्थर। वे “यरूशलेम के निवासियों के लिये फन्दा और जाल” होंगे, जो वे “बहुत से” हैं जो गिरते हैं; परन्तु उन थोड़े लोगों के लिये जो मुहरबन्द किए जाते हैं, “वही” उनका “भय” होंगे।

परमेश्वर का “भय” वही था जिसका अभाव हच्चा में था, और जो लोग वास्तव में परमेश्वर का भय मानते हैं, उनके पास उस भय से भिन्न प्रकार का भय होता है जो बहुतों पर तब आता है जब वे ठोकर खाते हैं। भय के ये दो प्रकार उन लोगों को चिह्नित करते हैं जो परीक्षा की प्रक्रिया में उत्तीर्ण होते हैं और जो असफल होते हैं। जो उत्तीर्ण होते हैं, उन पर मुहर की जाती है; और जो नहीं होते, उनका प्रतिनिधित्व संख्या पाँच के द्वारा किया जाता है, क्योंकि वे “ठोकर खाएँ, और गिरें, और टूट जाएँ, और फँस जाएँ, और पकड़ लिए जाएँ।” मुहर लगाए जाने का वह समय, जिसे रविवार के नियम से पहले घटित होता हुआ दर्शाया गया है, जब भ्रम और अव्यवस्था की एक अवधि होती है, वही समय है जब दस कुँवारियों का दृष्टान्त पूरा होता है।

जो बहुतों के ठोकर खाने के विपरीत मुद्रित किए गए थोड़े लोग हैं, वे वही हैं जो यहोवा की “प्रतीक्षा” करते हैं; इस प्रकार वे उन बुद्धिमान कुँवारियों की पहचान कराते हैं जिन्होंने “प्रतीक्षा की।” कुँवारियों के इन दो वर्गों के भीतर एक पवित्र और एक अपवित्र भविष्यद्वाणी-संबंधी प्रतीक्षा भी है, जो भय के दो प्रकारों के अनुरूप है।

“जब दूल्हे ने आने में विलम्ब किया, तो वे सब ऊँघने लगीं और सो गईं।’ दूल्हे के विलम्ब करने के द्वारा उस समय के बीत जाने का संकेत दिया गया है जब प्रभु की आशा की गई थी, उस निराशा का, और उस प्रत्यक्ष विलम्ब का। इस अनिश्चितता के समय में, सतही और आधे मन के लोगों की रुचि शीघ्र ही डगमगाने लगी, और

उनके प्रयत्न शिथिल पड़ गए; परन्तु जिनका विश्वास बाइबल के व्यक्तिगत ज्ञान पर आधारित था, उनके पैरों के नीचे ऐसी चट्टान थी, जिसे निराशा की लहरें बहा नहीं सकती थीं। 'वे सब ऊँघने लगीं और सो गईं,' एक वर्ग निश्चिन्तता में और अपने विश्वास के परित्याग में, और दूसरा वर्ग धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता हुआ जब तक कि अधिक स्पष्ट ज्योति न दी जाए। तौभी परीक्षा की उस रात में, अन्तिम वर्ग भी कुछ सीमा तक अपना उत्साह और समर्पण खोता हुआ प्रतीत हुआ। आधे मन के और सतही लोग अब अपने भाइयों के विश्वास पर आश्रित नहीं रह सकते थे। प्रत्येक को अपने लिए स्वयं स्थिर रहना था या गिरना था।" *The Great Controversy*, 395.

जो लोग पवित्र रीति से प्रतीक्षा करते हैं, वे "चिह्न और आश्चर्य" ठहराए जाने वाले हैं, जब रविवार-व्यवस्था के समय उन्हें संसार के लिए एक ध्वज के समान ऊँचा उठाया जाएगा; उस समय भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का विषय उस ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है जो "उन से जो परिचित आत्माओं के अधिकारी हैं, और उन जादूगरों से जो फुसफुसाते और बड़बड़ाते हैं" सम्बन्धित है, और उस ज्ञान का भी जो "व्यवस्था और साक्ष्य" द्वारा चिन्हित किया गया है। यह वही परीक्षा है जैसी हव्वा और आदम के लिए थी। क्या हम ऐसी शिक्षा को ग्रहण करते हैं जिसमें सत्य त्रुटि के साथ मिश्रित और संयुक्त हो, या हम "यहोवा यों कहता है" पर दृढ़ खड़े रहते हैं; क्योंकि यदि वे इस वचन के अनुसार नहीं बोलते, तो इसका कारण यह है कि उनमें ज्योति नहीं है। सच्ची और झूठी शिक्षा, मसीह और शैतान के बीच महान विवाद में सत्य की एक प्रधान रेखा है। नैशविल परमेश्वर के वचन के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक है, जैसे निश्चित रूप से सदोम स्वैराचार का प्रतीक है, और जैसे न्यूयॉर्क संयुक्त राज्य अमेरिका की आर्थिक शक्ति का प्रतीक है तथा पेंटागन उसकी सैन्य सामर्थ्य का प्रतीक है।

पतरस नैशविल पर गिरने वाले अग्नि-गोले की देहलीज़ पर, पानियुम और उस पर्वत पर खड़ा है, जो मन्दिर की परीक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। वह पहचानता है कि जब अग्नि-गोले गिरेंगे, तब लौदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिज़्म को फटकारा जाएगा और लज्जित किया जाएगा, और यह कि नैशविल, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा संसार को चेतावनी दी जानी आवश्यक है। इस्लाम का सन्देश दूतों की पुष्टि करता है, ठीक वैसे ही जैसे कर्मल पर गिरी आग ने यह पुष्टि की थी कि एलिय्याह सच्चा भविष्यद्वक्ता था। तथापि, नैशविल के लिए चेतावनी केवल तीसरे हाथ के इस्लाम की नहीं है, और न ही मात्र इस बात की कि आकस्मिक आक्रमण में किस प्रकार के अस्त्र प्रयुक्त किए जाते हैं। चेतावनी के सन्देश को यह चिह्नित करना चाहिए कि इस्लाम को न्याय लाने की अनुमति क्यों दी जा रही है—ऐसा न्याय जो उस काल का आरम्भ करता है जिसमें हजारों नगर नष्ट कर दिए जाते हैं। यह पहले से चिह्नित कर देना कि इस्लाम नैशविल पर एक आकस्मिक आक्रमण करेगा, दूतों को प्रमाणित करेगा; पर यदि वह केवल इतना ही करे, तो वह एक अपूर्ण चेतावनी होगी।

नैशविल की अग्निगोलाएँ परमेश्वर का एक न्याय हैं, जो एक अल्प अवधि का आरंभ करती हैं, जिसका अंत रविवार-व्यवस्था पर होता है; और वह, जैसे इस अवधि के आरंभ में था, वैसे ही परमेश्वर का एक न्याय भी है। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पहले ही बता दिया था कि परीक्षा क्या है, और यदि वे उस परीक्षा में असफल हों तो उसके परिणाम क्या होंगे। सिस्टर व्हाइट "कारण से परिणाम तक" तर्क करने की सामर्थ्य के महत्व की पहचान करती हैं, और बाइबल यह बताती है कि "कारण" के बिना "शाप" नहीं आएगा।

जैसे पक्षी भटकता फिरता है, और जैसे अबाबील उड़ती फिरती है, वैसे ही अकारण शाप नहीं आता। नीतिवचन 26:2.

नैशविल के अग्निगोलक "प्रभाव" हैं, और वह "शाप" भी जो आता है। चेतावनी के संदेश में "कारण" अवश्य सम्मिलित होना चाहिए। भविष्यद्वक्ता योना का संदेश केवल चालीस दिनों में होने वाले विनाश की पहचान भर नहीं था, वरन् उसने राजा से लेकर समस्त प्रजा तक जागृति और सुधार उत्पन्न किया। जो बात प्रकट हुई, वह यह थी कि राजा और उसकी प्रजा अपनी दुष्ट चाल-चलन से फिर गए। योना ने उन्हें आने वाले विनाश के विषय में बताया था, और यह भी बताया था कि वह उनके दुष्ट और बुरे जीवन-व्यवहार के कारण है।

क्योंकि यह बात नीनवे के राजा तक पहुँची; तब वह अपने सिंहासन पर से उठा, और अपना राजवस्त्र उतारकर टाट ओढ़ लिया, और राख में बैठ गया। और राजा तथा उसके प्रधानों की आज्ञा से नीनवे में यह घोषणा कराई और प्रकाशित की गई कि न मनुष्य, न पशु, न गाय-बैल, न भेड़-बकरियाँ कुछ भी चखें; वे न चरें, और न पानी पीएँ; परन्तु मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें, और परमेश्वर की दोहाई बड़े बल से दें; वरन् वे सब अपने-अपने बुरे मार्ग से, और उस उपद्रव से जो उनके हाथों में है, फिरें। योना 3:6-8.

इस्लाम एक तुरही-संबंधी शक्ति है, और प्रकाशितवाक्य आठ से ग्यारह तक की सात तुरहियाँ, तथा अध्याय सोलह भी, विशिष्ट भविष्यद्वाणीगत विशेषताएँ धारण करते हैं। पहली चार तुरहियाँ सन् 321 में पहला रविवार-विधि पारित करने के कारण साम्राज्यवादी रोम पर आए हुए न्याय थे। अगली दो तुरहियाँ सन् 538 में एक रविवार-विधि पारित करने के कारण पोपीय रोम पर आए हुए न्याय थे। प्रकाशितवाक्य आठ से ग्यारह तक की सात तुरहियाँ, प्रकाशितवाक्य सोलह की सात अंतिम विपत्तियों का प्रतिरूप हैं, जो रविवार के प्रवर्तन के कारण मानवजाति पर परमेश्वर का न्याय है।

नैशविल की चेतावनी-संदेश को उन पदचिन्हों की पहचान करनी चाहिए जो रविवार-व्यवस्था की ओर ले जाते हैं, और भविष्यद्वाणी-संबंधी साक्ष्य के आधार पर न्याय उसके पीछे आता है, उससे पहले नहीं। न्याय रविवार-प्रवर्तन का परिणाम है। पद चालीस के गुप्त इतिहास के वे पाँच साक्षी, जिन पर हम विचार कर रहे हैं, भिन्न-भिन्न गवाहियाँ प्रस्तुत करते हैं, परन्तु मानवीय साक्षियों के विपरीत, सभी भविष्यद्वाणी-रेखाएँ एक साथ मिल जाती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में अंतिम रविवार-व्यवस्था के पदचिन्हों की पहचान तब पूरी होती है जब पतरस, नैशविल के अग्नि-गोलों के प्रभाव को समझाने के लिए, डोनाल्ड ट्रम्प की गवाही को सम्मिलित करता है।

नैशविल की चेतावनी संसार के लिए यह है कि उसी समय-बिंदु पर परमेश्वर मनुष्यों और राष्ट्रों पर अपना अंतिम न्याय आरम्भ करता है। तब नगरों के विनाश की एक अवधि आरम्भ होती है और शीघ्र ही रविवार के कानून तक पहुँचती है, जहाँ राष्ट्रीय धर्मत्याग के पश्चात् राष्ट्रीय विनाश आता है। तब शैतान मसीह का रूप धरकर आता है, और दुष्ट महासंघ स्थापित किया जाता है, जब वे दस राजा उस दर्शन को स्थिर करने वाले तेरे लोगों के लुटेरों को अपना राज्य देने पर सहमत होते हैं। नैशविल की चेतावनी उस इतिहास द्वारा निरूपित है जो नैशविल से पहले आता है, जैसा कि डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा पशु की एक मूरत बनाने में प्रकट किया गया है। ट्रम्प का संदेश वह चेतावनी की तुरही है जो नैशविल के अग्नि-पिंडों से पहले बजती है।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।